चित्र-कार्ड के खेल और सीखना | मेरे अनुभव

मुंशी लाल बारसे

बच्चों के शुरुआती विकास और शिक्षा में खेलों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मेरा अनुभव कक्षा आठ तक शिक्षण का रहा है, जहाँ मैंने खेल और शिक्षा की कई सम्भावनाएँ देखीं और उन पर काम किया है। मैं जिस दिन कोई गतिविधि न करूँ, तो ऐसा लगता है जैसे कुछ छूट-सा गया है। कई बार किसी तरह की अवधारणा पर खेल की सम्भावना नहीं लगती है, तो मैं कक्षा की शुरुआत किसी वार्मअप गतिविधि या खेल के साथ करता हूँ जो बच्चों को सुनने-बोलने,पढ़ने-लिखने,तर्क/अनुमान लगाने में मदद करते हैं।

कार्ड तैयार करना

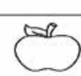
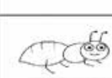
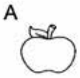
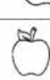
कक्षा पहली में आए 24 बच्चों को अँग्रेज़ी अक्षर और उन पर आधारित चित्र एवं शब्द बोलने, पढ़ने-लिखने, पहचानने में अस्पष्टता थी। शब्द-चित्र कार्डों की टोकरी, स्कूल/कक्षा में थी। मैं इन कार्डों का प्रयोग रोज़ उन्हें अँग्रेज़ी पढ़ने, बोलने से परिचित कराने के उद्देश्य से करता था। बच्चों से कहता था कि चित्र-कार्ड खाली समय में पढ़ें, समझें और इनसे खेलें। लेकिन उन्हें कभी ऐसा ख़ुद करते हुए नहीं देखा, कार्डों का इस्तेमाल करवाने के लिए मुझे ही शामिल होना पड़ता था। फिर मैंने देखा कि बच्चे 'फ़ोटो जीत' और 'ताश का खेल' छुपकर खेलते हैं और मेरे या अन्य किसी शिक्षक के आते ही खेल को रोक देते या कार्ड छिपा देते।

मैंने इन्हीं खेलों को अँग्रेज़ी के चित्र-कार्ड, चित्र-अक्षर कार्ड, अक्षर कार्ड एवं चित्र-शब्द कार्डों के साथ खेलने का विचार बनाया ताकि वे खेलते-खेलते इन्हें सीख सकें।

इसके लिए तैयारी के प्रमुख चरण निम्नानुसार थे :

1. कक्षा 2 के सभी कुंजीशब्द (keyword) की थीमवार सूची बनाना।
2. कुंजी शब्दों में सभी के लिए शब्द-चित्र कार्ड बनाना।
3. चयनित शब्दों के शब्द-चित्र और अक्षर-चित्र पोस्टर बनाना।
4. कुंजी शब्दों में से हर अक्षर के चुनिन्दा 4-4 शब्दों का चयन करना। फिर 5×10 सेमी साइज के आयताकार चित्र-कार्ड तैयार करना(चित्रों को बनाना या चिपकाना)। (कुल कार्ड संख्या $4 \times 4 \times 26 = 416$)
5. 5×10 सेमी साइज के आयताकार अक्षर-चित्र कार्ड तैयार करना और अक्षर लिखना। (कुल कार्ड संख्या $4 \times 4 \times 26 = 416$)
6. 5×10 सेमी साइज के आयताकार शब्द-चित्र-कार्ड तैयार करना और शब्द लिखना। (कुल कार्ड संख्या $4 \times 4 \times 26 = 416$)
7. 5×10 सेमी साइज के आयताकार शब्द-कार्ड तैयार करना, शब्द लिखना | (कुल $4 \times 4 \times 26 = 416$ कार्ड)
8. 5×10 सेमी साइज के आयताकार अक्षर-ध्वनि कार्ड तैयार करना। (कुल $4 \times 4 \times 26 = 416$ कार्ड)

A अक्षर का पूरा सेट नीचे की तालिका में है :

Types of cards	1	2	3	4	Total number of cards
Picture card					1 X 4 X 4 =16
Picture+letter card	A  a	A a	A a	A a	1 X 4 X 4 =16
Word+picture card	 apple	 axe	 ant	 aeroplane	1X4X4 =16
Word card	Apple	Axe	ant	aeroplane	1 X 4 X 4 =16
Letter card with sound	A a ऐ	A a ऐ	A a ऐ	A a ऐ	1 X 4 X 4 =16

इस तरह एक अक्षर के लिए 20 कार्ड। चार सेट में कुल 80 कार्ड थे। अतः 26 अक्षर के 26 × 80 = 2080 कार्ड। समस्त कार्ड का प्रयोग दो खेलों में किया। यानी चित्र, अक्षर-चित्र, शब्द-चित्र, शब्द और अक्षर- ध्वनि कार्ड के कुल 10 सेट बनाए गए। इस सेट में हर अक्षर, शब्द, चित्र को चार अलग-अलग रंग (काला,लाल,नीला,हरा) से रंगा गया। हर सेट के कार्डों की खाली साइड को भी एक अलग रंग से रंगा गया।

अक्षर-ध्वनि खेल

पहला दिन : इनका प्रयोग कराने के लिए बच्चों को 'सम्पर्क फ़ाउण्डेशन' का अक्षर-ध्वनि वीडियो दिखाया। जिसमें आए 6 अक्षरों के चित्रों पर चर्चा करते हुए, परिचय करना और what is this? करके पूछना बताया गया था। इसे कक्षा में समूह और जोड़ी बनाकर गतिविधि स्वरूप किया गया। लेखन व पहचान हेतु कक्षा में तीन अक्षरों के बारह चित्रों पर रंग कराया। बाक़ी तीन अक्षरों के बारह चित्रों पर घर में रंग करने के अभ्यास दिए।

दूसरा दिन : अक्षर-ध्वनि आडियो सुनकर दोहराया व शेष 6 अक्षरों के चित्रों के लिए पहले दिन की तरह के अभ्यास किए।

तीसरा दिन : बच्चों को बिना सुने, समूह में m, n, o, p, q, r, s के लिए letter's sound poem बोलना था। उसके बाद 'कार्ड झपट' खेलना था।

खेल से पहले यह बातचीत की गई–

'क्या आप खेलना चाहते हैं?' मैंने पूछा।

बच्चों ने कहा, 'हाँ.. हाँ... हाँ।'

मैंने पुन: पूछा, 'खेल में क्या-क्या होता है?'

बच्चों के जवाब थे, 'मज़ा आता है, दौड़ते हैं, छुपते हैं, पकड़ते हैं।'

मैंने पूछा, 'मज़ा क्यों आता है?'

'क्योंकि हम जीत जाते हैं।' बच्चों ने कहा।

मैंने बच्चों से कहा, 'इसका मतलब कोई हारता है और कोई जीतता है। तब हारने वाले को कैसा लगता है?'

एक बच्चा बोला, 'बुरा लगता है।'

मैंने (दूसरे बच्चों की ओर मुख़ातिब होकर) पूछा, 'बच्चो, बताओ आपको कैसा लगता है?'

एक बच्चे का जवाब था, 'नहीं टीचर मैं दूसरी बार जीत जाता हूँ।'

मैंने बातचीत जारी रखते हुए कहा, 'इसका मतलब कभी एक जीतेगा, तो कभी दूसरा। हम किसी भी काम को मन से, नियम से रोज़-रोज़ करें, तो ज़रूर जीतेंगे। खेलों में हार और जीत तो होती ही रहती है। जो जीतते हैं उन्हें ख़ुश होना चाहिए। लेकिन जो हारते हैं उन्हें अगली बार अच्छे से खेलने के लिए तैयार होना चाहिए। और जो जीता है उसे बधाई देना चाहिए वरना कोई खेल ही नहीं हो पाएगा।'

'लेकिन कुछ बच्चे हारने वाले को चिढ़ाते हैं।' कुछ बच्चों ने कहा।

'ऐसा क्यों?' मैंने सवाल किया।

सब बच्चे चुप थे। मैंने कहा, 'ठीक है! अच्छा जीतने वाले सोचें! अगर हारने वाले फिर खेलें नहीं तो एक समय जीतने वाला अकेला बच जाएगा। तब फिर वह किसके साथ खेलेगा।'

'किसी के साथ नहीं खेल पाएगा।' बच्चों ने जवाब दिया।

'फिर कैसा लगेगा?' मैंने पूछा।

'अच्छा नहीं लगेगा' बच्चों ने कहा।

'तो बताओ चिढ़ाना ठीक है?' मैंने पुन: सवाल पूछा।

'नहीं।' बच्चों का जवाब आया।

मैंने सभी बच्चों को सम्बोधित करते हुए अपनी बातचीत आगे बढ़ाई, 'तो इस बात को ध्यान में रखते हुए ही हम खेल खेलेंगे कि किसी को हारने पर चिढ़ाएँगे नहीं। तो अब बताओ, खेल खेलना है या नहीं?'

सभी बच्चे एक सुर में, 'खेलना है...खेलना है' चिल्लाने लगे। लगभग सभी बच्चे खेल की भावना को समझ चुके थे। ऐसा मुझे प्रतीत हुआ।

मैंने सहजता से बच्चों से कहा, 'ठीक है आज का खेल शुरू करते हैं।'

कार्ड झपट

इसमें 7 पिक्चर कार्ड दो–दो फिट की दूरी पर रखे जाते हैं। हर कार्ड के आमने-सामने बच्चे खड़े होते हैं। खेल कराने वाले व्यक्ति के द्वारा पिक्चर का नाम कहते ही कार्ड छूना होता है। जो पहले छूता है, उसे तय किए गए पॉइंट मिलते हैं। अंक बोर्ड में दर्शाए जाते हैं। जैसे - निम्न तालिका अनुसार (p = person)

खेल के बाद कक्षा में बिन्दु मिलान कर चित्रों को पूर्ण कर, रंग भरवाया गया। बाक़ी 14 चित्रों को घर से रंग करके लाने के लिए दिया गया। अन्त में बचे हुए सात अक्षरों के चित्रों के लिए भी इसी भाँति अभ्यास किया गया।

P-1		P-3		P-5			P-7		P-9		P-11		P-13
Mango		Nest		Orange			Parrot		Queen		Rat		Sun
P-2		P-4		P-6			P-8		P-10		P-12		P-14

चौथा दिन : सुनने-समझने की प्रक्रिया के उपरान्त, मैंने सभी कार्ड को मिला दिया ताकि यह पुख़्ता हो सके कि बच्चे चित्रों के नाम अँग्रेज़ी में अच्छे से जान गए हैं, बच्चों को फैले हुए कार्डों में से कोई भी 14 कार्ड उठाने के लिए कहा। फिर बच्चों को पाँच-पाँच के समूह में बाँट दिया ।

बच्चों को खेलने का तरीक़ा बताया। सबको अपने फ़ोटो छुपा कर रखना है। अब क्रम से हर बच्चा एक फ़ोटो पर लिखा अँग्रेज़ी नाम लेते हुए उसे बीच में रखेगा। जैसे ही पहले से रखी फ़ोटो से किसी बच्चे की फ़ोटो मैच करेगी, वह बीच में रखी सारी फ़ोटो जीत जाएगा। बचे हुए फ़ोटो से खेल जारी रहेगा। अगर किसी के पास फ़ोटो नहीं बचें, तो वह जीतने वाले से उधार लेकर खेलता रह सकता है। बाद में उन्हें लौटाया जा सकता है। बच्चे बोले, ''हम ऐसे ही **'फ़ोटो जीत'** खेलते हैं''। बच्चे खेलने के लिए काफ़ी उत्साहित थे। खेल शुरू हुआ और बच्चों को बहुत मज़ा आया। खेल के बाद मैंने बच्चों से कहा कि वे खाली समय में जब मन करे इसे खेल सकते हैं।

पाँचवाँ दिन : हमने चार्ट से अँग्रेज़ी अक्षर पढ़ने और उसे ज़ोर से बोलने की गतिविधि की और कार्डों की खाली साइड के रंग के आधार पर सेट तैयार किया। बच्चों को नया खेल बताया **- 'जोड़ी मिलान',** जो कि बच्चे ताश के पत्तों से अक्सर खेलते हैं।

कुछ बच्चे इसे खेलना चाहते थे तभी एक बच्चे ने कहा पत्ते खेलना अच्छी बात नहीं है, पुलिस पकड़कर ले जाती है। मैंने कहा कि लेकिन हम तो पैसे वाला नहीं खेल रहे हैं। हम तो मज़े से पढ़ना सीखने के लिए खेल रहे हैं। हमारे कार्ड तो कुछ सीखने की चीज़ है, असली ताश के पत्ते नहीं। तब बच्चों ने माना कि हाँ इसे खेला जा सकता है।

छठा दिन : a b c d e f g... कविता बोलने और अक्षर-चित्र कार्ड से **'पारी जीत'** खेल की बारी थी। इसमें 6-6 के समूह में 3-3 की टीम बनाकर खेलना होता है। दोनों टीम के सदस्य 1-1 कर कार्ड बोलते हुए बीच में रखते जाते हैं। जैसे ही एक जैसे कार्ड मिलते हैं, मिलाने वाली टीम 'पारी विजेता' होती है। इस तरह यह खेल चलता रहता है। अन्त में जो टीम अधिक बार विजेता रहती है, वह आज की विजेता कहलाती है। यह खेल दो लोगों में भी खेल सकते हैं।

बच्चों ने कहा, यह भी फ़ोटो खेल जैसा ही है, उन्हें खेलने में मज़ा आया। उन्होंने यह भी कहा कि वे इसे अपने खाली समय में भी खेलना चाहेंगे। एक शिक्षक के नाते मैं चाहता था कि बच्चे स्वयं कहें कि हम खेलेंगे। और बच्चे इन खेलों को स्वयं खेलने के लिए उत्सुक थे यह जानकर एक संतुष्टि और उपलब्धि का एहसास हुआ।

इसके बाद एक चार्ट पेपर में पूर्व में पढ़े गए चित्रों के साथ नाम पढ़ना, चित्रों के साथ शब्दों की जोड़ी मिलाना, अधूरे शब्द पूरे करना, चित्रों की सहायता से शब्द पढ़ना और शब्दों में रंग करना, शब्दों में आए अक्षरों को एक-एक कर पढ़ना और अगले चार दिन कक्षाकार्य-गृहकार्य के रूप में शब्द-चित्र-कार्ड से 'फ़ोटो जीत', 'पारी जीत' खेलकर अभ्यास किया गया।

शब्द-खेल

अगले चरण में शब्दों को पढ़ने, पहचानने और लिखने का अभ्यास आरम्भ किया गया। सामूहिक रूप से कविता बोलने के बाद 'बताओ मैं कौन हूँ' खेल कराया गया। खेल में एक बच्चे की पीठ पर कपड़े में सेफ्टी पिन से एक शब्द-कार्ड लगा दिया जाता है। जिसकी पीठ पर कार्ड लगा है उसे वह दिखाई नहीं देता है, न ही उसे बताया जाता है। बाक़ी बच्चे पीठ में लगे शब्द-कार्ड को मन में पढ़ लेते हैं। जिसे पढ़ने में दिक्क़त है उसे समूह में से कोई एक सदस्य क़रीब जाकर धीरे-से बता देता है। अब कार्डधारी बच्चे को इस शब्द को बूझना है। वह बाक़ी बच्चों से कुछ प्रश्न करता है। बच्चों को उनके जवाब हाँ या न में ही देना है। ऐसे ही प्रश्न-उत्तर करते हुए शब्द पता किया जाता है। इस खेल में शुरुआत में नाम बूझने में समस्या आती है लेकिन एक-दो बार के अभ्यास के बाद बच्चे प्रक्रिया/ पैटर्न समझ जाते हैं।

शब्दों को पढ़ने-लिखने के अभ्यास के दौरान बच्चे काफ़ी हद तक शब्दों की बनावट से परिचित हो चुके थे। बच्चे कई शब्दों को पढ़ने-लिखने लगे थे। उसके बाद उन्हें कहानियों, कविताओं को सुनकर, उनमें आए कुछ ख़ास शब्दों को लिखना, शब्दों को पढ़ना, शब्दों में आए अक्षरों को एक-एक

कर पढ़ना, शब्द को पढ़कर चित्र बनाना, चित्रों के लिए शब्द लिखना आदि गतिविधियों का क्रमशः अभ्यास करवाया।

अब बारी थी अक्षर और उसकी ध्वनि को समझने की जिसके लिए सबसे पहले 'सम्पर्क फ़ाउण्डेशन' का वीडियो देखा गया। उसे देखने के बाद बच्चों ने ध्वनि-कविता को दोहराया, गाया एवं चर्चा करके यह समझा कि A, B, C या अन्य अक्षरों की, किसी शब्द में कैसी ध्वनि होगी। जैसे A = ऐ, B = ब , C = क और स। अन्त में अक्षर-ध्वनि(letter-sound) कार्ड सेट से उपरोक्त खेल खेलना और अक्षर-कार्ड जोड़-जोड़कर पढ़ने, सुनकर लिखने और rhyming word पढ़ने-लिखने के अभ्यास से, पढ़ने-लिखने की आरम्भिक दहलीज़ तक पहुँचना हुआ।

निष्कर्ष

यह मेरे 30-35 घण्टों के, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कार्य-अभ्यास की कहानी है। कार्डों का यह खेल बच्चे खाली समय में खेलते रहते हैं। वे अपना समय अर्थपूर्ण गतिविधियों और सीखने में लगा रहे हैं। इसका आशय यह है कि स्कूल के शुरुआती दिनों में पढ़ने-लिखने के सीधे अभ्यास से बच्चे बोरियत महसूस न करें, इसके लिए शिक्षण के दौरान यदि कुछ खेलों को शामिल कर लिया जाए तो बच्चे सीख भी जाते हैं और सीखना मज़ेदार बन जाता है। सीखने-सिखाने में खेलों का अपना योगदान है जिसने मुझे प्रत्यक्ष मदद की है।

साथ-ही-साथ इन खेलों को बच्चों के साथ खेलते हुए यह भी समझ बनी कि :

- खेल से सम्बन्धित नियमों, सामाजिक अनुभवों, मान्यताओं पर चर्चा करना ज़रूरी है वरना खेलों से सब बच्चों को जोड़ना नामुमकिन होगा।
- खेलों में कुछ नयापन भी लाते रहना चाहिए। मैंने नए कार्ड या नए खेल के ज़रिए नयापन लाने की कोशिश की।
- बच्चे सीख ही जाएँ, ऐसा कठोर आग्रह रखने से खेल में भी बोरियत होने लगती है। बच्चों द्वारा कार्ड का नाम नहीं बता पाने पर जितनी बार वे पूछते उतनी बार मैं बताता और उन्हें दोबारा कोशिश करने के लिए कहता। मेरा मानना है कि साथ खेलने के दौरान बच्चे एक-दूसरे से सीख जाते हैं।



मुंशी लाल बारसे अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़ में 2012 से अध्यापन कर रहे हैं। वे हिन्दी एवं समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर हैं। बतौर शिक्षक वे भाषा एवं गणित सीखने की प्रक्रिया को समझने के लिए प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के साथ काम करने में रुचि रखते हैं। उनसे munshi.barse@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।